रिकॉर्ड :– नैन हीन को राह.... ॐ पिताश्री 27/10/63
ओम शांति। बच्चों ने गीत सुना। यह तो बाप ने (समझा)या है, तुम बच्चे बाप को जानते हो और (बाप) को जानने बाद, तुम जो नैन हीन सम्प्रदाय थे ... अथवा रावण सम्प्रदाय थे, वो सज्जे राम सम्प्रदाय बने हो। रावण ने तुमको अंधा बना दिया है ना। तो राम आकर तुमको सज्जा बनाते हैं। राम का अर्थ तो बच्चों को समझा दिया है। राम कोई त्रेतायुगी सीता के पति (लिए) नहीं कहते। राम सभी का सद्गति करने वाला परमपिता प..... को कहेंगे; क्योंकि उनकी जयंती मनाई जाती है। ज़रूर वो परमपिता परम आत्मा आते हैं। ... आकर सभी पतितों को पावन बनाते हैं। ..... जैसे अपन को नाम देते हैं सर्व दया लीडर। वैसे बाप सर्व का पतित–पावन। सभी पतित ..... (सा)री मनुष्य सृष्टि पतित है। कोई का भी (जन्म) बर्थ कौड़ी है। मनुष्य मात्र का जन्म कौड़ी तुल्य (है)। एक परमपिता, जिसको कहा जाता– नैन(हीन) को राह बताने वाला; परन्तु उसको (जानते) नहीं। जानते हो तो मिलना सहज है; परन्तु कोई नहीं जानते। तो परिचय कैसे मिले? अब परमपिता प० अपना परिचय खुद दे रहे हैं। उस..... जयन्ती हीरे तुल्य है। बाकी जो भी सतयुग से लेकर, ल०ना० से लेकर लक्ष्मी की जयन्ती मनाते हैं ..... मनाते हैं .....नवमी भी मनाते हैं। बाप समझाते हैं कि इन सभी मनुष्य मात्र की .... कौड़ी तुल्य है। क्यों समझाते हैं; क्योंकि कोई कृष्ण के भक्त, कोई ल०ना० के भक्त होंगे, कोई ..... हनुमान के या कोई लक्ष्मी के वा (सरस्वती) के भक्त होंगे, तो कहेंगे– क्यों इनकी जयंती कौड़ी तुल्य है? बाप समझाते हैं कि सतयुग से लेकर जो भी हो गए हैं देवताओं सहित, सभी पतित हैं। इन सभी को पावन करने वाला कौन? वो ही ऊँच (ठहरा) ना। ल०ना० को भी इतना पावन (बना)ने वाला कौन, जबकि कलियुग में सभी पतित हैं। .....सतयुग में ....ऐसा बनाने वाला कौन? इस समय तो सभी पैगम्बर, मैसेंजर, न सिर्फ वो; परन्तु ल०ना० भी, सभी पतित हैं। यह तो मनुष्य जानते नहीं। कहते हैं कि मनुष्य पुनर्जन्म लेता है। तो ज़रूर पुनर्जन्म सतयुग से लेकर शुरू हुआ होगा ना। ऐसे नहीं, सतयुग वाले पुनर्जन्म नहीं लेंगे, पीछे वाले लेंगे। सतयुग स्वर्ग वाले स्वर्ग में पुनर्जन्म लेंगे, कलियुग नर्क वाले नर्क में पुनर्जन्म लेंगे। अब सभी पुनर्जन्म लेते। सभी अभी पतित हैं। तो उनकी क्या बढ़ाई है! बलिहारी तो एक पतित–पावन की है। जब तक वो न आए सभी ठोकरे खाते रहते हैं। फिर भी कहते, शिवोहम्। तो कितनी मूर्खता है। पतित–पावन करने वाले को भूल अपन को शिवोहम् कहलाते हैं। तो तुमको शिवबाबा की महिमा निकालनी है। उनकी जयंती हीरे तुल्य है। बाकी सभी जयंतियाँ कौड़ी तुल्य है। बहुतों को गुस्सा लगेगा, कहेंगे– कृष्ण की जन्माष्टमी भी कौड़ी तुल्य है? जब तक राज़ को समझे। सभी आत्माएँ पुनर्जन्म लेते–2 अब सभी पतित हैं। पहले जो आते हैं, पावन आते हैं। ऐसे नहीं, वहाँ (परमधाम में) कोई पतित रहते हैं। वहाँ से पावन आते हैं फिर कोई के 84 जन्म, कोई के 8, 70, 60, 20 जन्म लेकर पतित होना है। यहाँ अब कोई पावन नहीं है। तब कहते, पतित–पावन आओ। कहाँ से? परमधाम से। दूर देश का रहने वाला आए पतित देश में। स्त्री–पुरुष पतित हैं। छोटे कुमार–कुमारी को नहीं कहेंगे। पतित खास कहेंगे, जो विख (पीते)–पिलाते हैं। एक/दो को सावधान कर गिराते हैं। तेरा है ज्ञान चिक्षा पर बैठ एक/दो को सावधान कर चढ़ाने का सौदा।

इस समय बेहद का बाप आकर तुमको भी सन्यास कराते हैं। सन्यास भी दो प्रकार का है। एक है रजोगुणी, हठयोग कर्म .....स। वो तो द्वापर से चलता आता है; परन्तु

दुनिया में तो घोर अंधियारा होता जाता है। ..... भी ढेर के ढेर हैं; परन्तु सभी कलियुग में आए पहुँचे हैं। अब सारी दुनिया को सोझरे ... लाने लिए सत्गुरु चाहिए। जब वो आकर ज्योत जगावे तब सतयुग में घर–2 में सोझरा हो। इसको कहते, सच्ची दीवाली। इस समय घर–2 में अंधियारा है। यह घर नहीं, शरीर रूपी घर में आत्मा की ज्योत जगाने लिए आत्मा को इन्जेक्शन लगाना है। शरीर को तो ..... लगाते रहते हैं। आत्मा को कौन–सा इंजेक्शन ... चाहिए जो प्युअर हो जाए। ....पिता प० को ज्योति स्वरूप ज्योत जगाने वाला कहते हैं। (वो) समझाते हैं कि आत्मा को (इंजे)क्शन कैसे लगाओ। आत्मा में ही सभी बीमारियाँ हैं। ..... में खाद (पड़)ती है। सन्यासी समझते हैं, आत्मा निर्लेप है। ..... खाना खाते रहते हैं; परन्तु आत्मा ही पतित होती है। इसलिए कहते, (कलियुग) में झूठी काया, तो काया (शरीर) रहने वाली आत्मा भी झूठी। आत्मा बो(लती) प० सर्वव्यापी है। यह किसने कहा? आ(त्मा ने) कहा। तुम कहते हो, मैं आत्मा हूँ, फिर कहते– प० सर्वव्यापी है। यह झूठ आत्मा ने बोला। .....–दुख आत्मा भोगती है शरीर द्वारा। धर्मराज वहाँ (आत्मा) को सज़ा देते हैं; परन्तु जब ..... न मिले तब तक सज़ा दे नहीं सकते। तो ..... धर्मराज भी शरीर धारण कराता ..... नहीं, यह स्थूल शरीर (इस समय जो शरीर है) धारण करते हैं तब आत्मा हाए–2 करती है। (सत)युग में पुण्यात्मा है तो कभी हाय–2 नहीं (करती)। यह गीत नैनहीन को..... किसने गाया? ..... कहती है– बाबा, राह बताओ, मैं इस शरीर द्वारा ठोकरे खा रही हूँ। पता नहीं, आप..... कैसे .....। बहुत ठोकरे खाई हैं। ..... प्रभु, बाबा, परमपिता ..... अब तुमको नैन मिले हैं। तुम बच्चे भी, जैसे बाबा नॉलेजफुल है वैसे मास्टर नॉलेजफुल बने हो। जो बाबा के बने हैं वो हीरे तुल्य बन रहे हैं। फिर आवेंगे तो भारत भी हीरे तुल्य होगा। भारत जब हीरे तुल्य था तो देवताएँ हीरे–जवाहरों के मालिक थे। अब कौड़ी तुल्य भारत है तो सचीवाल्य भी पत्थरों का बनाया है। वहाँ हीरे–जवाहरों के महल बनावेंगे। ऐसा हीरे तुल्य (बाप) बना रहे हैं। तो बाप भेंट सुनाते थे। वो है हद का सन्यास, जो वैराग दि...लाते हैं घरबार से। खास स्त्री से। कहते हैं, यह नागिन हैं, चण्डालिन हैं। बहुत नाम देते हैं। अब वो तो सिर्फ घरबार का हर्थ एण्ड होम का सन्यास कराते हैं। रहते इसी जंगल में हैं। रजोगुणी दुनिया में आते हैं। अब यह है हद का वैराग। तो जैसे सन्यास दो प्रकार हैं, वैसे वैराग भी दो प्रकार का है। तेरा है बेहद का वैराग। वो तो सिर्फ घरबार छोड़ जंगल में रहते हैं। तुमको इस सारी दुनिया से वैराग आता है। (यह) छी–2 दुनिया है, पतित, विकारी है। तो इससे बुद्धि टूट जाती है। जैसे पति कितना प्यार करता है; परन्तु जब मरता है तो वैराग आता है। कहते, मुर्दे को निकालो। वैसे तेरे लिए यह कलियुगी मित्र–संबंधी सब मरे पड़े हैं। तो इनमें बुद्धि क्या अ(टकानी) है? तो तुमको सारी दुनिया से बेहद का वैराग आता है। गृहस्थ व्यवहार में जनक मिसल रहते हुए, कमल फूल समान न्यारे रहते हैं। इस दुखधाम से चलना है तो इससे लागत क्यों लगावें? यह सभी महल–माड़ी खलास होनी है, फिर किसमें (ममत्व) लगावे! जैसे कोई मरता है तो सभी कहते– राम–2 कहो। (बाप) भी कहते हैं– सभी का मौत है; इसलिए मुझे याद करो और जो नई दुनिया स्वर्ग मैं रच रहा हूँ इसको याद करो। इसको संस्कृत में लिखा है– मनमनाभव, मद्याजीभव। यह है योगबल की यात्रा। योग लगाने से बल मिलता है। जैसे इंजेक्शन भरते हैं, तो जब तक इंजेक्शन भर जावे तब तक सुई उसमें लगी रहती है।

भर जाता है तो सुई निकाल देते हैं। इस रीत बाबा भी कहते, बुद्धियोग मेरे साथ लगाओ तो मेरी शक्ति मिलेगी। कितना सहज समझाते हैं। बाकी तो सभी सन्यासियों पिछाड़ी धक्के खाते रहते हैं। तब कल्प पहले भी कहा था– यदा यदा.... जब भारत नर्क बन जाता है तब कल्प के संगमयुगे, ऐसे नहीं (युगे–2) आता हूँ। युग–2 में पतित थोड़े ही बनते हैं। पतित होते हैं कलियुग की अंत में। इसके बाद (ही सतयुग) आता है। युगे–2 मैं आकर क्या करूँ? सतयुग बाद तो त्रेता में आना है। इसमें मेरे आने की तो (दरकार) ही (न)हीं। न द्वापर में। द्वापर में आकर क्या सतयुग (स्था)पन करूँ? वो तो कलियुग बाद सतयुग आएगा, बीच में कैसे आएगा? इसको ही कहते हैं कल्याणकारी युग, जब कलियुगी नर्क को सतयुगी स्वर्ग बनाते हैं। यह बेहद की बातें हैं। सभी आत्माओं को सुख–शांति देने वाला है। दो–पाँच की तो बात नहीं। अब तुम बेहद के बाप से वर्सा ले रहे हो। सदाशिव सदा सुख का वर्सा दे रहे हैं। शिव का अर्थ भी समझाया है कि यह (शिव लिंग) नहीं है, वो भी स्टार मुआफिक आत्मा है; परन्तु परे ते परे रहने वाले सुप्रीम सोल है। हम अपन को सुप्रीम सोल अथवा परमआत्मा नहीं कहेंगे। जब परमधाम में रहते थे तब भी हम परमआत्मा नहीं थे। वहाँ तो सभी आत्माओं का नम्बरवार निवास स्थान है। समझाणी तो बहुत अच्छी मिलती है; परन्तु कोटों में कोई पहचानते हैं। सन्यासी थोड़े ही कहेंगे कि कोटों में कोई पहचानते हैं। अब तुम ईश्वरी(य) (कुटुम्ब) में बैठे हो, बाप भी बैठे हैं, जिनसे ब्राह्मणों की रचना होती है। ब्राह्मणों का रचयिता शिव, ब्रह्मा नहीं। ब्रह्मा द्वारा रचयिते हैं। तो तेरा सभी से ऊँच जन्म है; क्योंकि तेरी नॉलेज है। एक तो तुम नर को ना० बनाने की, मनुष्य को देवता बनाने की सेवा करते हो, दूसरा– तेरे पास सारी नॉलेज है। परमपिता प० से लेकर सभी आत्माओं के पार्ट को तुम जानते हो। दूसरे तो हद के बाप की जीवन कहानी हद के बच्चे जानते हैं। तुम परमपिता परमआत्मा की भी जीवन कहानी जानते हो। (जो) नॉलेजफुल, ब्लिसफुल है, उनकी कहानी सिर्फ तुम ब्राह्मण जानते हो; इसलिए तेरा जीवन बड़ा अमूल्य है। बेहद के बाप के मददगार बन भारत को स्वर्ग बनाते हो। तेरे पास जो ज्ञान है वो न शूद्रों में है, न देवताओं में है। न जंगल में है, न बगीचे में है। तुम न कलियुगी काँटों के जंगल में हो, न सतयुगी फूलों के बगीचे में हो। शूद्रों में भी नॉलेज नहीं, जंगली हैं। न देवताओं में। इस नॉलेज के हिसाब से वो भी जंगली हैं। इसलिए कहते– यह कृष्ण भी बुद्धू है। तेरी कितनी महिमा है। इसलिए गीता भागवत की भी इतनी पूजा होती है। बाकी तो सभी शास्त्र फालतू है। बाप तुमको कितनी गुह्य बातें बताते हैं और शास्त्रों में क्या लिखा है। वो तो कृष्ण की कितनी महिमा करते, हम कहते– अनाड़ी है। तो कृष्ण के भक्त होंगे तो बिगड़ेंगे; परन्तु जरा सोचे कि ज्ञान का तीसरा नेत्र तो सिर्फ ब्राह्मणों को है, न कलियुगी शूद्रों को, न सतयुगी ब्राह्मणों को। अब यह सभी राज़ बुद्धि में कैसे बैठे; इसलिए बुद्धि का बर्तन साफ चाहिए। वो होगा योग से। योग से 21 जन्म सदा सुखी, मालामाल हैं तो और भी जन्म सुख के। 70–75 जन्म बड़ा सुख है। यह तो पिछाड़ी के 10–15 जन्म दुख भोगते हो। तेरा जितना सुख और कोई पाए नहीं सकते। इसमें भी अति इन्द्रिय सुख अभी जो अति दुख से अति सुख मिलता है, इतना सुख देने वाले शिवबाबा का बर्थ डे कितना धामधूम से मनाना (चाहि)ए। शिव रात्रि इनकी मशहूर है। बाकी कृष्ण ने अंधेरी रात में जन्म नहीं लिया है। यह ..... रात में शिव ने जन्म लिया है। अब कहते हैं– बच्चे, तुम नंगे आए थे ना..... से निकल अपन को नंगा समझो। गाते हैं ना, नंगे आए थे, नंगे जाना है। वो तो नंग..... जाकर शरीर धारण करते हैं; परन्तु तुमको तो वापिस जाना है, पीछे गर्भमहल में जन्म लेंगे। अब तो सभी गर्भजेल में जन्म लेते हैं। यह बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। कहते हैं, मैं अपने बच्चों से बात करता हूँ।

और कोई से नहीं करता। वेद–शास्त्र तो सभी से बात करते हैं। यह कहते, मैं बच्चों से ही बात (करता हूँ)। औरों से क्यों करूँ? अपने बच्चों (से) कुछ भी बात करूँ, इसमें औरों का क्या जाता है! ब(च्चा) ..... है। इतने बच्चे प्रजापिता ब्रह्मा के सिवाए और कोई को हो नहीं सकते। ब्रह्मा है तो जगदम्बा (भी) होगी ना। दोनों हैं; परन्तु तुम मात–पिता जो गायन है, वो एक शिवबाबा का। इसमें ब्रह्मा जगदम्बा भी उनके बालक हो गए। (बा)प तो तुमको वर्सा देने आए हैं, इसमें तुमको कोई तकलीफ थोड़े ही देंगे। कहते हैं– लाडले बच्चे, तुमको बेहद का स्वर्ग का वर्सा देने, तेरी सेवा में आए उपस्थित हुआ हूँ। मैं ही तेरा बाप, टीचर, सत्गुरु बनता हूँ। गुरुनानक भी उनकी महिमा करते हैं। वास्तव में नानक को भी गुरु कह नहीं सकते; क्योंकि गुरु वो जो सद्गति करे। वो तो आते हैं ऊपर से धर्म स्थापन करने। वो वापिस कैसे ले जाएँगे; परन्तु गुरु कह देते, कोई को ख्याल न हो। ऐसे तो अनेक प्रकार के गुरु हैं, जो शिक्षा देते हैं। पवित्र बनाते हैं। बाकी गति–सद्गति नहीं क(र) सकते। बच्चों को प्वाइंट्स तो ढेर मिलती हैं। तेरा काम है, नोट करो, इस पर विचार–सागर–मंथन करो। अख़बार में लिखो– शिव जयंती हीरे तुल्य है, बाकी सभी कौड़ी तुल्य है। ल०ना० भी अभी पतित हैं तो उनकी जयंती क्यों मनावें? क्यों न उनको ऐसा (ब)नाने वाले की मनावें। गाँधी की भी कौड़ी तुल्य है। भल बिगड़े। जब हम अपने ल०ना० के लिए ही लिखते हैं फिर क्या! जो भी मनुष्य सृष्टि पर हैं, सभी पुनर्जन्म लेते–2 अब पतित हैं, दुख ही दुख है। साधू–महात्माओं की बुद्धि (में) भी शास्त्रों की ठीकरियाँ बजती हैं। है ही पत्थरबुद्धि तो पत्थर–ठिक्कर के महल बनाते हैं। पारस बुद्धि सोने के महल बनाते हैं। तुम पारसनाथ बनते हो तो सोने की द्वारिका में नि(वास) करते हो। अब सोने की द्वारिका कहाँ है? कहते, सागर में चली गई। अब तो छोटा सा .... बाप तो तिरी पर बहिष्त ले आया है। कोई तकलीफ थोड़े ही देते। बाहर वालों की तो बात नहीं। वो थोड़े ही 84 का चक्कर लगाते हैं। जो ब्राह्मण बनते हैं, वो ही देवता कुल के बनते हैं। बाप ने सारा 84 का चक्कर समझाया है। इस स्वदर्शन चक्र को फिराते रहो तो सतयुग के मालिक बनेंगे; परन्तु चक्र फिराते–2 ..... हो जाता है। यह तो होगा। बाप कहते, एक घड़ी, आधी घड़ी, जितना समय मिले, फिरते रहो। ताक अंत में अभ्यास पक्का हो जाएगा। इस दुनिया में तो दुख ही दुख है, रौरव नर्क है। यह तो पिछाड़ी का पॉम्प है। धन का यह गया कि गया। इसलिए इस दुनिया से वैराग दिलाते हैं। अच्छा, बापदादा, मीठी मम्मा का लकी सितारों प्रति यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ डायरैक्शन

बापदादा कहे कि हर सेन्टर के एलबम एक मास के अंदर बम्बई में आ जाने चाहिए।

हर सेन्टर में जो पवित्रता की प्रतिज्ञा पालन कर रहे हैं, सिर्फ उन्हों के ही (फो)टू एलबम में होना है। नाम शिववंशी ब्रह्माकुमारी, ब्रह्माकुमार भी लिख सकते हैं और ऑक्युपेशन सहित। कब (से) पवित्र रह रहे हैं, कब से आते हैं, पूरी लिखत हो। एलबम में फोटू लगाने से पहले इस प्रकार की लिखत हो कि (परम)पिता .... शिव की मत पर अपनी जीवन को पवित्र बनाकर भारत को पवित्र राम राज्य बना.....धन से सेवा कर रहे हैं। ऐसे रमणीकता से लिखत हो जो गवर्मेन्ट समझे कि भारत की ..... है। लि.... भिन्न–2 प्रकार की हो। एक जैसी नहीं। युगलों की पहले फिर कन्याओं की..... फिर कन्याओं की फोटू। इस प्रकार हर सेक्शन पर पहले लिखत होनी ज़रूरी है, जो देखने वाले पढ़े तो अच्छी रीत समझ सके। अब जो एलबम बन कर आए हैं। इनमें बापदादा ने देहली, रजौरी का जो बना हुआ है, वह पसंद आया है। इसमें .....ने भिन्न–2 रीत की लिखत लिखी है, जो प्रातः बाबा को पसन्द है। मतलब प्रातः बा(बा) बोले– बच्चे, यह भी एक अलौकिक सर्विस है। कोई भी देखे तो पढ़ने (से) समझ जावे। ॐ